IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन''

"Study of Aspiration level of higher secondary level students"

***Vikas Kumar, **Dr. Sanjay kumar**

*****Rsearch Scholar, Department of Education, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu - 333515, Rajasthan, India

******Research Guide, Department of Education, Singhania University, Pacheri Bari, Jhunjhunu - 333515, Rajasthan, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में आकांक्षा स्तर उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजस्थान के झुन्झुनू जिले से 800 विद्यार्थियों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। आँकड़ो के सकंलन हेतु आकांक्षा स्तर का मापन – डॉ. महेश भार्गव एवं डॉ. एम. ए. शाह द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : उच्च माध्यमिक, विद्यार्थी, आकांक्षा स्तर, ग्रामीण, और शहरी क्षेत्र।

प्रस्तावना :

बालक के समक्ष ऐसा स्वच्छन्द वातावरण प्रस्तुत किया जाना चाहिये जिसमें वह स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी बुद्धि, रूचि एवं स्वाभाविक शक्तियों के अनुरूप वांछित उन्नति कर सके। रूचि के प्रतिकूल वातावरण बालक की नैसर्गिंक शक्तियों का दमन करता है एवं उसकी स्वाभाविकता को नष्ट कर देता है।

– **रवीन्द्रनाथ टैगोर**

सच्ची शिक्षा वही है जो बालकों की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों को व्यक्त तथा प्रेरित करती है। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा का प्रभाव स्वीकार किया जाता रहा है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षा वैयक्तिक, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति के लिए ही नहीं अपितु सभ्यता और संस्कृति के विकास के लिए भी अपरिहार्य है। मानव के लिए शिक्षा ही वह मार्ग है, जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पृथक करती है, शिक्षा द्वारा ही बालक का सर्वांगीण विकास होता है जिससे वह अपना जीवन सुखमय बनाता है तथा सामाजिक जीवन में अपने कर्त्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में सक्रिय योगदान देता है। इस प्रकार शिक्षा व्यक्ति तथा राष्ट्र की उन्नति का महत्वपूर्ण साधन है।

प्राचीन काल में शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य बालक का बौद्विक विकास माना जाता था, किन्तु आज शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना है। विद्यालय इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है जिसके फलस्वरूप राष्ट्र के लिए योग्य नागरिकों का निर्माण होता है।

कवि मिल्टन का कथन है कि – ''यथा सूर्योदय होने पर ही दिवस होता है, वैसे ही मानव का उद्भव बालक से होता है।'' अतः प्रत्येक राष्ट्र का परम कर्त्तव्य है कि वह अपने अमूल्य बालधन की सर्वाधिक सुरक्षा करें क्योंकि वर्तमान समय प्रतियोगिता एवं स्पर्धा का समय है चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या व्यवसाय का।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग मे जहाँ शिक्षा के हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा है वहाँ प्रत्येक अभिभावक यह चाहते हैं कि उनके बालक के व्यक्तित्व का चहुँमुखी विकास हो। इसके लिए आवश्यक है कि उनका मानसिक विकास सही तरीके से हो तथा उनका आकांक्षा स्तर उच्च हो। आकांक्षा स्तर का सफल भावी जीवन में महत्वपूर्ण योगदान होता है, या यों कहें कि इन दोनों तथ्यों के आधार पर विद्यार्थी यह निश्चित कर पाता है कि उसे आगे किस क्षेत्र में कार्य करना है यदि वह अपने लिए सही क्षेत्र का चुनाव करता है तो इससे उसकी शैक्षिक उपलब्धि व विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, अन्यथा नकारात्मक प्रभाव दिखाई देते हैं।

चूकिं माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरावस्था में होते है इस अवस्था में ही छात्र–छात्राओं को चुनौतियों का सबसे अधिक सामना करना पड़ता है क्योंकि इस वक्त एक ओर जहाँ उचित शिक्षा व सही मार्गदर्शन उसके जीवन की धारा बदल कर आकाश की ऊँचाइयों तक ले जा सकती है, वही दूसरी ओर इसका अभाव उसे पतन के गर्त में भी डूबो सकता है। अतः आवश्यकता है उचित परिस्थितियों के निर्माण की। अतः शिक्षा ही इस समय में ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर सकती है, जो विद्यार्थी को सहज एवं सरल बनायें और उसे सही मार्ग प्रशस्त करें।

बच्चों के पूर्णतः विकास के लिए मानसिक विकास के साथ–साथ शारीरिक विकास, सामाजिक विकास, भावात्मक विकास का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः आज आवश्यकता है कि अध्यापक एवं अभिभावक पहले बालक की मानसिक योग्यता अर्थात बौद्धिक क्षमता जाने, तत्पश्चात उसे उसकी रूचि, योग्यता व क्षमता के अनुसार क्षेत्र का चयन करने की स्वतन्त्रता प्रदान करें तभी वह अपनी क्षमता व योग्यतानुसार अपना आकांक्षा स्तर निर्धारित कर उसे प्राप्त कर पायेगा और भावी जीवन में सफल हो पायेगा।

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर का अध्ययन''

"Study of Aspiration level of higher secondary level students"

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों (GDS) का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों (GDS) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु झुन्झुनू जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण आकांक्षा स्तर – डॉ. महेश भार्गव एवं डॉ. एम. ए. शाह का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु झुन्झुनू जिले में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए आकांक्षा स्तर की अनुसूचि का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु (N) मध्यमान, प्रमाप विचलन (SD) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (CR–Value), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1 – उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों (GDS) में कोई सार्थक अन्तर नहीं है –

तालिका

मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

fo|kFkhZ	N	M	SD	SED	D	df	C.R.
ग्रामीण	400	2.24	1.176	0.09	0.42	798	4.46
शहरी	400	2.66	1.38				

** **0.05 सार्थक स्तर**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की आकांक्षा स्तर के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तांकों (GDS) का मध्यमान क्रमशः 2.24 व 2.66 है तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 1.176 व 1.38 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.09 तथा मध्यमानों का अन्तर 0.42 है। दानों समूहों के प्राप्ताकों का आलोचनात्मक अनुपात 4.46 है जो कि 798 के स्वततन्त्रता के अंश हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से अधिक है। **अतः परिकल्पना–1 अस्वीकृत होती है।** अर्थात उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के लक्ष्य भिन्नता प्राप्तकों (GDS) में सार्थक अन्तर पाया जाता है।

चूंकि ग्रामीण विद्यार्थियों का मध्यमान (2.24) शहरी विद्यार्थियों के मध्यमान (2.66) से कम है परन्तु दोनों में अन्तर पाया जाता है। इससे निष्कर्ष निकलता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों के लक्ष्य भिन्नता प्राप्ताकों में सार्थक अन्तर है।

ग्राफ

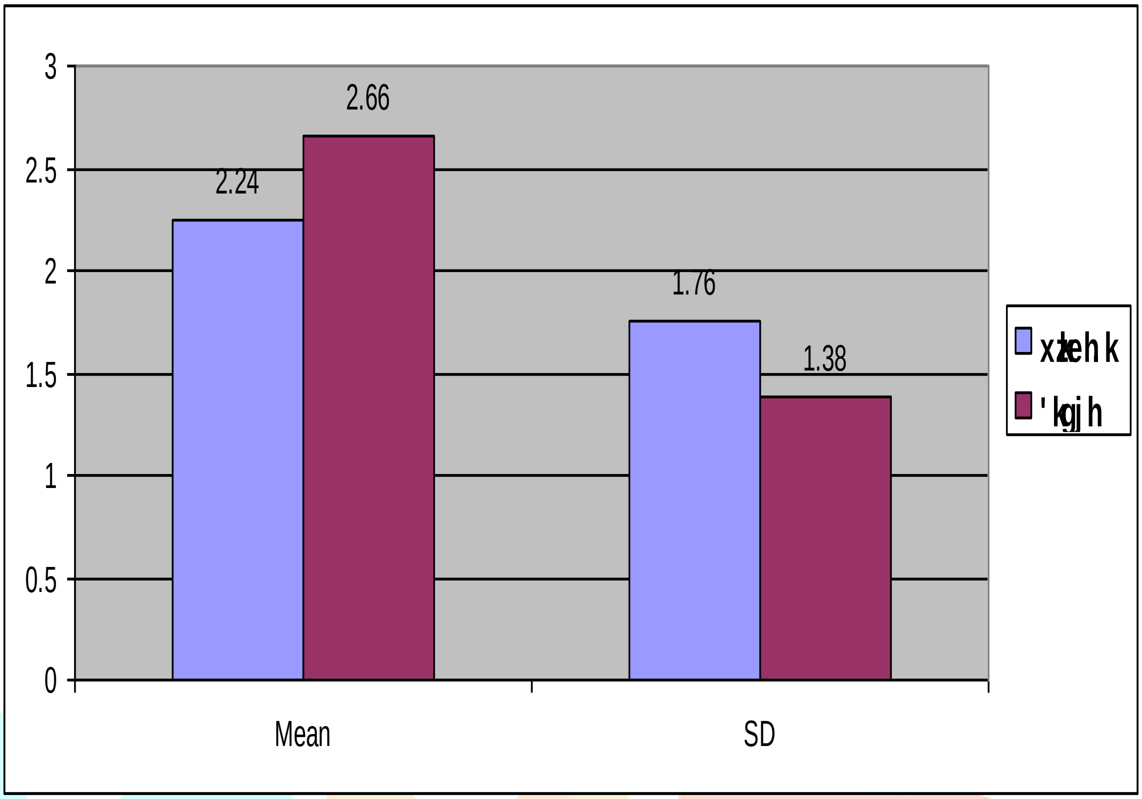

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- **शर्मा, उषा (1991)** : नवोदय एवं सामान्य राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की निर्देशन सम्बन्धी आवश्यकता एवं आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन राजस्थान में शिक्षानुसंधान, सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएं/2, शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर, पृ.सं. 213
- भटनागर, एस. (2004), शिक्षा मनोविज्ञान तथा शिक्षण शास्त्र, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 142 –155
- अस्थाना, वी.एवं अस्थाना, एस. (2005), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 480–507
- सिंह, आर. पी. एंव उपाध्याय आर. वी. (2005), शिक्षण एवं अधिगम का मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 159–177
- कपिल, एच.के. (2005), सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 555–585
- वर्मा, ए.के. (2006), अधिगम का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, रवि प्रकाशन, वाराणसी, 293–306
- शर्मा, आर. ए. (2007), अधिगम एवं विकास के मनोसामाजिक आधार, आर. लाल बुक डिपों, मेरठ, 206–208
- भटनागर, ए. बी. एवं भटनागर, एम. (2007), मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ, 124–143
- सरीन, एस. एवं सरीन, ए. (2008), शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 56–83
- शर्मा, आर. ए. (2008), शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 124–197.
- नागर, जे. (2010) बालक के मानसिक स्वास्थ्य में अध्यापक की भूमिका, 'शिविरा पत्रिका, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, बीकानेर।
- कुमार, एन. (2011), आंकाक्षा स्तर पर किशोरों के भविष्य पर प्रभाव, विद्यामेघ, विद्या प्रकाशन मन्दिर लि., मेरठ, 37